कविता के बहाने - कुंवर नारायण

प्रस्तुत कविता कुंवर नारायण द्वारा रचित है। कवि ने कविता के अर्थ को खोलने की कोशिश की है कि असल में कविता है क्या? कविता के वजूद को कवि ने चिड़िया, फूल और बच्चे के माध्यम से स्पष्ट किया है। कविता के मायने को स्पष्ट करते हुए कवि चिड़िया से पहली पंक्ति में तुलना करते हैं। वे कहते हैं कि जिस तरह चिड़िया अपने पंखों के सहारे उड़ान भरती है, उसी तरह कविता भी कवि के हृदय में उत्पन्न होने वाले विचारों की ऐसी उड़ान है, जो अनंत तक पहुंचना चाहती है।

कविता अपने अंदर मनुष्य समाज की जिन चिंताओं को लेकर उनके निदान खोजने की तलाश में उड़ती फिरती है, इसके भाव को चिड़िया समझ पाने में असमर्थ होती है। चिड़िया की उड़ान की एक सीमा है, पर कविता की उड़ान और उद्देश्य सीमाहीन हैं।

दूसरे पंक्ति में कविता की तुलना फूल से करते हुए, कवि कहते हैं कि जिस तरह एक फूल खिलता है, उसी तरह एक कविता भी खिलती है। वह फूल कह तरह ही अपनी सुगंध बिखरती है। पर बावजूद इसके कविता के खिलने और फूल के खिलने में मौलिक अंतर होता है। कविता सात्विकता का, सकारात्मकता का और सृजनात्मकता का संदेश फैलाती है। फैलाती

ही रहती है। वह अमर होती है। उसका संदेश अमर होता है। फूल एक अवधि के बाद मुरझा जाता है, उसका खिलना क्षणभंगुर है। इसलिए फूल कविता के पीछे रह जाता है और कविता आगे निकल जाती है। आज कबीर, तुलसी, सूरदास नहीं है, परन्तु उनकी कविता में व्याप्त संदेश हमारे मन-मस्तिष्क पर अंकित है।

तीसरे पंक्ति में कवि, कविता की तुलना बच्चे से करते हैं। वे कहते हैं कि बच्चा जैसा खेलता है, कविता भी वैसा ही एक खेल है। खेल यहां अपने व्यापक अर्थ में आया है। बच्चे का खेलना उसके आंतरिक उद्‌गारों का साकार होकर सामने आ जाना है। वह बच्चे की आत्मा की अभिव्यक्ति है। बच्चा निष्कलुष होता है। मेरा घर-तेरा घर, इसका घर-उसका घर एसे भेद वह नहीं करता। सब तरफ दौड़ता-भागता, जाता-पहुँचता है। सब घर उसके अपने घर है। संसार ही उसका है। कविता भी भेद नहीं करती। वह भी संसार को जोड़कर देखने की आदी होती है। इसलिये कविता बच्चे के अर्थ को और बच्चा कविता के अर्थ को जानने में सक्षम होते हैं।

अर्थात् कविता कोरी कल्पनाओं और आत्म-मुग्धता में डूबा रहने वाला सृजन न होकर, जीवन के साथ जुड़ाव रखनेवाला सृजन होता है।